स्वामी विवेकानंद 1863-1902

स्वामी विवेकानंद एवं भारतीय संस्कृति के लिए उनका योगदान

स्वामी रामकृष्ण के आध्यात्मवाद के सिद्धांत, सभी धर्मों की एकता तथा मानव मात्र की सेवा जैसे विचारों को विश्व में फैलाने का कार्य उनके शिष्य स्वामी विवेकानंद ने किया। सन् 1893 ई० में, वे शिकागो में सर्वधर्म-सम्मेलन में भाग लेने गए। वहाँ उन्होंने अपनी ओजस्वी वाणी में अपने विचारों एवं सिद्धांतों को व्यक्त किया, जिसका वहाँ उपस्थित सभी धर्मों के लोगों पर गहरा प्रभाव पड़ा। उन्होंने अपने व्याख्यान में कहा कि हिन्दू धर्म अति महान है, क्योंकि यह सभी धर्मों की अच्छाइयों को समान रूप से स्वीकार करता है।

स्वामी विवेकानंद द्वारा भारतीय संस्कृति एवं हिन्दू समाज की जागृति का वर्णन -

हिन्दू धर्म में जागृति।- स्वामी विवेकानंद ने हिन्दू धर्म के आध्यात्मवाद को पुनर्जन्म दिया और एक बार पुनः हिन्दू धर्म की श्रेष्ठता को स्थापित करके उसे ईसाई और इस्लाम धर्म के आक्रमणों से बचाया।

भारतीयों का मार्गदर्शन।- उन्होंने युवा भारतीयों में नवचिन्तन जागृत की। उन्होंने पाश्चात्य देशों की अच्छाइयों और भारतीय धर्म की अच्छाइयों को समन्वित करते हुए, भारतवासियों को उपदेश दिया। उन्होंने कहा था, "भारत के धर्म को साथ लेते हुए पाश्चात्य लोगों के समाज का निर्माण करो। समानता, स्वतंत्रता, कर्तव्यपरायणता और शक्ति की भावना में पश्चिमी देशों की तरह बनो और साथ-साथ धर्म, संस्कृति तथा भावनाओं में पक्के हिन्दू बनो।"

राष्ट्रीयता का उदय - इस प्रकार स्वामी विवेकानंद ने भारतीयों के आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक उन्नति करने के लिए विशेष रूप से प्रोत्साहित किया।

Dr. Umesh Kumar Rai
Dept of History
S.B. College, Arra
B.A. - Part-iii; Paper-Vi
History of India (1765-1950)
22.02.2024
Class - 02 (Second)
Mob: 8809947478
Email Id: ukrai.sasaram@gmail.com